24 अप्रैल, 2018

किम जोंग-उन का चीन दौरा : एक आकलन

*डॉ. संजीव कुमार, डॉ. जोजिन वी. जॉन तथा डॉ. पुयम राकेश सिंह**

28 मार्च, 2018 को उत्तरी कोरिया तथा चीन के आधिकारिक मीडिया ने घोषणा की कि उत्तरी कोरिया के राष्ट्रपति किम जोंग-उन 25-28 मार्च, 2018 को चीन का दौरा किया। इस दौरे को उनके दौरे से पूर्व अथवा चीन में उनके प्रवास के दौरान तक सार्वजनिक नहीं किया गया गया। यह दौरा किम का पहला प्रतिवेदित अन्तर्राष्ट्रीय दौरा था जो दिसम्बर 11 में सत्तासीन हुए राष्ट्रप्रमुख के साथ पहली बैठक थी। यद्यपि यह दौरा 'अनाधिकारिक' था किन्तु चीन का दौरा करने वाले किसी भी शीर्ष नेता की अपेक्षा किम को उसी प्रकार का बल्कि उससे भी अधिक सम्मान प्रदान किया गया।

बीजिंग दौरे के साथ छः वर्षों के अन्तर्राष्ट्रीय एकान्तवास की समाप्ति से किम के अधीन उत्तर कोरिया की विदेश नीति में प्रस्थान हुआ और प्योंगयांग-बीजिंग सम्बन्धों का एक नया युग प्रारम्भ हुआ। सबसे महत्त्वपूर्ण इस दौरे का समय था जो कि दक्षिण कोरिया तथा अमेरिका के साथ सम्मेलन के निर्धारित समय से पूर्व था। शी के सथ किम की बैठक परित्यक्त राष्ट्र से एक ऐसे राष्ट्र में उत्तरी कोरिया का रूपान्तरण भी व्यक्त करती है जो कम से कम गत दो माह में कोरियाई प्रायद्वीप में विकास पथ पर अग्रसर है। किम के बीजिंग दौरे के परिणामों का विश्लेषण करते हुए यह लेख उत्तरी कोरिया-चीन सम्बन्धों तथा कोरियाई प्रायद्वीप में उभरते परिदृश्य के निहितार्थ की व्याख्या करता है।

कोरियाई प्रायद्वीप की स्थिति : अभिवृत्तियाँ

जनवरी 2018 से कोरियाई प्रायद्वीप में एक नवीन परिदृश्य उभरा है जिसमें कूटनीतिक सम्बन्धों द्वारा प्रावधानित सुरक्षा सम्बन्धी तनाव कम हुआ है। गत तीन माह में दक्षिणी कोरिया तथा उत्तरी

कोरिया की कूटनीतिक पहलों से अन्तर-कोरियाई सम्मेलन तथा अमेरिका-कोरिया सम्मेलन की घोषणा सहित तात्विक परिणाम निकले।

उत्तरी कोरिया के सतत नाभिकीय एवं मिसाइल परीक्षणों से 2017 के द्वितीयार्ध में इस प्रायद्वीप में सुरक्षा तनाव नई ऊँचाई तक पहुँच गये। सितम्बर 2017 में संचालित नाभिकीय परीक्षण उत्तरी कोरिया का अब तक का छठा और सबसे बड़ा परीक्षण था और इसे हाइड्रोजन बम का लघु रूप माना गया जिसे अन्तर्महाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल (आईसीबीएम) में फिट किया जा सकता था। 2017 में उत्तरी कोरिया द्वारा किये गये 24 मिसाइल परीक्षणों में तीन आईसीबीएम तथा एक मध्य दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल (आईआरबीएम) का सफल प्रक्षेपण शामिल था। 29 नवम्बर, 2017 को ह्वासोंग-15 आईसीबीएम के सफल परीक्षण के उपरान्त प्योंगयांग ने अपने "राष्ट्रीय नाभिकीय शक्ति" की पूर्णता घोषित की। 13,000 किमी से अधिक दूरी तय करने वाला ह्वासोंग-15 वाशिंगटन डी.सी. तक पहुँचने में समर्थ था।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प तथा उत्तरी कोरिया के राष्ट्रपति किम जोंग-उन के मध्य धमकियों के आदान-प्रदान से तनाव और अधिक बढ़ गया। वांशिगटन के बार-बार "सैन्य विकल्प" की बात करने के कारण अगस्त 2017 से कोरियाई प्रायद्वीप में युद्ध की चरम सम्भावना हो गयी थी। किन्तु अमेरिकी पक्ष से बातचीत के द्वार खुले थे। यूएनएससी के पाँच प्रतिबन्धों को थोपने के द्वारा गत वर्ष के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने उत्तरी कोरिया की निरन्तर उत्तेजक कार्यवाहियों का जवाब दिया। उत्तरी कोरिया पर दबाव बनाने में ये प्रतिबन्ध अभूतपूर्व थे। उदाहरण के लिए, यूएनएससी 2397 ने उत्तरी कोरिया के ह्वासोंग-15 मिसाइलों के प्रक्षेपण के जवाब में तेल आयात सहित अन्य व्यापारिक प्रतिबन्ध लगाये और उत्तरी कोरिया के नागरिकों को विदेश में काम करना निषिद्ध कर दिया। इसके प्रत्युत्तर में उत्तरी कोरिया ने घोषणा की कि यूएनएससी 2397 का पारित होना युद्ध की गतिविधि है।

प्योंगचांग शीतकालीन ओलम्पिक खेलों के प्रसंग में अन्तर-कोरियाई सम्बन्ध में उन्नयन के द्वारा स्थिति में तीव्र परिवर्तन हुआ। किम जोंग-उन ने 2018 के नव वर्ष के अपने भाषण में शीतकालीन ओलम्पिक खेलों में भाग लेने तथा अन्तर-कोरियाई सम्बन्धों को उन्नत करने की इच्छा जताई। जनवरी 2018 में सियोल तथा प्योंगयांग ने दो चरणों की वार्ता संचालित की जिससे शीतकालीन ओलम्पिक खेलों में उत्तरी कोरिया की भागीदारी सुनिश्चित हुई। उद्घाटन समारोह में उत्तरी कोरिया तथा दक्षिणी कोरिया ने एकल टीम के रूप में मार्च किया और महिला आइस हॉकी टीम में संयुक्त मुकाबला किया। एक आश्चर्यजनक घटना और हुई कि उत्तरी कोरिया ने उत्तरी कोरियाई सरकार के समारोह प्रमुख किं योंग-नाम तथा विशेष प्रतिनिधि किम यो-जोंग, किम जोंग-उन की बहन के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमण्डल भी भेजा।

सियोल तथा प्योंगयांग के मध्य खेल कूटनीति से उत्साहित होकर अप्रैल के अन्त में तीसरे अन्तर-कोरियाई सम्मेलन आयोजित करने एक अनुबन्ध किया गया। यह अनुबन्ध 5 मार्च, 2018 को प्योंगयांग में किम जोंग-उन तथा राष्ट्रपति मून जी-इन के विशेष प्रतिनिधि के मध्य राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार चुंग उई-योंग के नेतृत्व में एक बैठक के दौरान किया गया। प्योंगयांग में सियोल के कूटनीतिक अभियान के परिणामस्वरूप उत्तरी कोरिया-अमेरिका वार्ता की घोषणा भी की गयी जिसमें बैठक के लिए उत्तरी कोरिया के निमन्त्रण को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने स्वीकार किया। यदि राष्ट्रपति ट्रम्प तथा किम के बीच बैठक सम्पन्न हो जाती तो यह अमेरिका तथा उत्तरी कोरिया के बीच अब तक का सबसे पहला सम्मेलन होता। इसी पृष्ठभूमि में उत्तरी कोरियाई नेता किम जोंग-उन ने चीन का दौरा किया।

किम-शी की बैठक : परिणाम

किम के साथ बैठक के दौरान शी ने कहा कि चीन, "इस दौरे से उत्साहित है" क्योंकि यह "विशेष समय पर हुआ" है और इसकी "महान सार्थकता" है। शी ने कहा कि किम का यह दौरा दोनों देशों के बीच निरन्तरता तथा विकास की अभिव्यक्ति है और कहा कि ऐसा करना चीन तथा उत्तरी कोरिया के लिए "एक रणनीतिक विकल्प तथा एकमात्र उचित विकल्प है।" उन्होंने बल दिया कि चीन-उत्तरी कोरिया के सम्बन्ध "किसी विशेष समय किसी एक घटना के कारण न बदलने चाहिए और न बदलेंगे" और "क्षेत्रीय शान्ति, स्थिरता तथा विकास के लिए नये योगदान करेंगे।" यह कहते हुए कि "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय स्थितियाँ कैसे परिवर्तित होती हैं, हम दोनों वैश्विक विकास की अभिवृत्ति तथा चीन-डीपीआरके सम्बन्ध की समग्र स्थिति को दृढ़ता से जकड़े रहेंगे", शी ने उत्तरी कोरिया के साथ अपने व्यापारिक सम्बन्धों को पुन: जारी करने की चीन की उत्सुकता का संकेत दिया।

किम ने कहा कि उनका दौरा कोरियाई प्रायद्वीप में हालिया विकासों के विषय में सूचित करने के लिए "मित्रता तथा नैतिक उत्तरदायित्व" के कारण था। किम ने बल दिया कि चीन-डीपीआरके के सम्बन्ध "दृढ़" और "नवीन परिस्थितियों के अधीन, सम्बन्धों में वृद्धि रणनीतिक विकल्प है।" नाभिकीय मुद्दे पर चीनी बयान के अनुसार किम ने "कोरियाई प्रायद्वीप के परमाणु नि:शस्त्रीकरण" के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा की। उन्होंने शी को बताया कि "यदि दक्षिणी कोरिया तथा अमेरिका" उत्तरी कोरिया के "शान्ति स्थापित करने के लिए प्रगतिशील तथा समकालीन उपाय अपनाते समय शान्ति एवं स्थायित्व का वातावरण सृजित करने की उत्तम भावना के साथ प्रयास" को महत्त्व देते हैं तो प्योंगयांग नाभिकीय मुद्दे को हल करने के लिए तैयार है। ऐसा कहकर किम चीन की दोहरी नीति के प्रस्ताव की भाँति परमाणु नि:शस्त्रीकरण तथा शान्ति समझौते की तात्कालिक प्रक्रियाओं के एक उपागम तथा प्रतिदान (मुआवजा) की नीति का संकेत दे रहे हैं। किन्तु उत्तर कोरियाई वक्तव्य किम के परमाणु नि:शस्त्रीकरण की प्रतिबद्धता पर चुप था।

चीन में किम ने दक्षिणी कोरिया तथा अमेरिका के साथ आगामी सम्मेलन का भी सन्दर्भ दिया। व्यक्तिगत रूप से आधुनिकतम विकास पर शी के वक्तव्य देते समय किम आगामी सम्मेलन में चीनी समर्थन की आकांक्षा के अपने दौरे के प्राथमिक उद्देश्य को गुप्त नहीं रख पाये। उत्तरी कोरिया की सरकारी मीडिया ने कहा कि चीन का दौरा "कोरियाई प्रायद्वीप की नई स्थिति के अधीन डीपीआरके-चीन की महान मैत्री की दीर्घकालीन ऐतिहासिक परम्परा को अक्षुण्ण रखने की एकमात्र अभिलाषा सहित एक मेघविद्युत के समान" था। इस दिशा में किम ने "इस प्रायद्वीप में परामर्श और संवाद तथा शान्ति एवं स्थायित्व की अभिवृत्ति की संयुक्त सुरक्षा" के लिए उत्तरी कोरिया की दक्षिणी कोरिया तथा अमेरिका के साथ वार्ता के दौरान चीन के साथ रणनीतिक सम्पर्क बढ़ाने का सुझाव दिया।

चीन तथा उत्तरी कोरिया के सम्बन्धों में विकास के लिए शी ने चार प्रस्ताव दिये। प्रथम, उन्होंने उच्च-स्तरीय विनिमयों की निरन्तरता के महत्त्व को रेखांकित किया। इस सम्बन्ध में शी ने किम के साथ घनिष्ठ सम्पर्क की अपनी इच्छा व्यक्त की। उत्तरी कोरिया की सरकारी मीडिया ने बताया कि शी ने किम के प्योंगयांग दौरे के निमन्त्रण को स्वीकार किया है। दूसरा प्रस्ताव पार्टी स्तर पर अन्तर्क्रिया के महत्त्व पर केन्द्रित था। परम्परागत रूप से चीन-उत्तरी कोरिया के सम्बन्ध पार्टी स्तर पर प्रबन्धित थे। किन्तु हालिया वर्षों में विशेष रूप से शी के शासनकाल में यह अन्तर्क्रिया सरकारी स्तर पर अधिक रही। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी तथा उत्तरी कोरिया की वर्कर्स पार्टी के मध्य सम्बन्धों को सशक्त करने पर बल देना बीजिंग का उत्तरी कोरिया के रणनीतिक महत्त्व की वृद्धि का संकेत है। तीसरा प्रस्ताव दोनों देशों के मध्य विकासपरक सहयोग से सम्बन्धित है। शी ने "समय की अभिवृत्ति" के अनुरूप संयुक्त विकासपरक प्रयासों द्वारा उत्तरी कोरिया के सुधार और मुक्तता की आवश्यकता पर बल दिया। चौथा प्रस्ताव दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान में वृद्धि करना है।

उत्तरी कोरिया-चीन सम्बन्धों के नये प्रसंग

शीत युद्ध की समाप्ति तक उत्तरी कोरिया-चीन सम्बन्ध माओ जेदांग की प्रसिद्ध उक्ति 'क्लोज ऐज लिप्स एण्ड टीथ' (होंठ और दाँत की भाँति निकटता) के मैत्री सिद्धान्त पर आधारित थी। यह मैत्री साझा सिद्धान्तों तथा कोरियाई युद्ध की ऐतिहासिक धारणा पर आधारित था जिसमें 1961 में एक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किया गया था। इसके अनुसार सैन्य संघर्ष की स्थिति में चीन उत्तरी कोरिया की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध था। किन्तु शीत युद्ध की समाप्ति और विशेष रूप से 2006 में उत्तरी कोरिया के प्रथम नाभिकीय परीक्षण के उपरान्त इस सम्बन्ध की प्रकृति में इस सीमा तक परिवर्तन हुआ कि दोनों देश बमुश्किल अकेले-अकेले रहते हुए मित्र कहे जा सकें। अनेक चीनी विश्लेषक अब उत्तरी कोरिया को एक दायित्व के रूप में वर्णित करते हैं। 2011 में उत्तरी कोरिया में किम जोंग-उन तथा 2013 में शी जिनपिंग के कार्यभार ग्रहण करने के उपरान्त नाभिकीय तथा

मिसाइल परीक्षणों के उकसावे तथा किम जोंग-उन के अधीन बीजिंग के प्रति घनिष्ठता रखने वाले नेताओं के परिमार्जन के कारण दोनों के रिश्तों में ऐतिहासिक गिरावट आई। सियोल के साथ बीजिंग के उन्नत सम्बन्धों ने भी कोरिया के साथ सम्बन्ध में कटुता उत्पन्न की। संयुक्त राष्ट्र द्वारा उत्तरी कोरिया पर लगाये गये प्रतिबन्ध में चीन की बढ़ती भागीदारी प्योंगयांग के युद्धकारी व्यवहार पर बीजिंग के गुस्से का सूचक है।

यद्यपि उत्तरी कोरिया के प्रति बीजिंग की बाध्यकारी नीति प्रचण्ड रूप से कम हुई है किन्तु यह उत्तरी कोरिया की लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था की एकमात्र जीवन रेखा बनी हुई है। चीन उत्तरी कोरिया को अपने पक्ष में करने का लगातार प्रयास कर रहा है यद्यपि यह इसके रणनीतिक हित के लिए लगातार एक बोझ बनता जा रहा है। उत्तरी कोरिया को "न छोड़ने" का निर्णय कोरियाई प्रायद्वीप में चीनी रणनीति की दुविधा प्रदर्शित करता है। नाभिकीय शक्ति सम्पन्न उत्तरी कोरिया को समर्थन देना या उसे छोड़ देना, ये दोनों विकल्प रणनीतिक परिदृश्य में कोरियाई प्रायद्वीप में शान्ति और स्थायित्व बनाये रखने के चीनी उद्देश्य को खतरे में डालने वाला है। परमाणु शक्ति सम्पन्न उत्तरी कोरिया चीनी सीमा पर युद्ध या नाभिकीय हमले का खतरा पैदा कर सकता है और साथ ही दक्षिणी कोरिया पर चीन के प्रभाव को भी दुर्बल कर सकता है। दूसरी ओर, आर्थिक सहयोग बन्द करके या अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति तथा आर्थिक प्रतिबन्धों के पूर्ण प्रभाव द्वारा प्योंगयांग को त्रस्त करके उसे छोड़ देना उत्तरी कोरियाई शासन को ध्वस्त होने देने की सम्भावना उत्पन्न करता है। उत्तरी कोरिया के सम्बन्ध में बीजिंग की दुविधा इस क्षेत्र में चीन-अमेरिका सम्बन्धों की प्रतिस्पर्द्धा के कारण भी और अधिक जटिल है। रणनीतिक तथा सुरक्षा के महत्त्व के कारण अपनी शर्तों पर उत्तरी कोरिया की नाभिकीय समस्या का समाधान बीजिंग की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है और कोई सम्भावित अपवाद एक रणनीतिक दुःस्वप्न है।

सियोल तथा प्योंगयांग के तीव्र कूटनीतिक कौशल द्वारा संवाद तथा अनुबन्ध की नई स्थिति उत्पन्न हुई है। अन्तर-कोरियाई सम्मेलन की घोषणा तथा अमेरिका-उत्तरी कोरिया सम्मेलन के लिए किम जोंग-उन के निमन्त्रण की राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की स्वीकृति ने एक ऐसी स्थिति उत्पन्न की है जिसके द्वारा दोनों कोरिया तथा अमेरिका के मध्य मामलों को सुलझाये जाने के कारण बीजिंग स्वयं को अलग-थलग महसूस कर रहा है।

दौरा : चीनी कूटनीति के लिए एक बड़ी राहत?

कम से कम निम्नलिखित तीन कारणों से किम जोंग-उन का दौरा चीनी कूटनीति के लिए बड़ी राहत सिद्ध हो सकता है।

<u>प्रभावहीनता के विरुद्ध प्रमाण</u>

कोरियाई प्रायद्वीप में नये विकास की पृष्ठभूमि में मार्च के प्रारम्भ में एक चीनी दैनिक समाचार-पत्र ने लिखा : "चीनी लोगों को शान्त और सन्तुलित रहना चाहिए और यह मानसिकता छोड़ देनी चाहिए कि चीन को प्रभावहीन किया जा रहा है।" इसने पुन: लिखा कि "उत्तरी कोरिया पर चीन का व्यापक प्रभाव समाप्त हो गया है। चीन ने 1990 के मध्य में पैनमुंजियोम से प्रतिनिधियों की वार्ता समाप्त होने के उपरान्त उत्तरी कोरिया से अपनी सेनाएँ हटा ली हैं।"

ध्यान देने योग्य है कि चीन की 19वीं पार्टी कांग्रेस (नवम्बर 2017) ने विश्व को सन्देश दिया कि चीन विश्व के मंच पर पहुँच चुका है। पार्टी कांग्रेस के पश्चात चीनी नेताओं द्वारा दिये गये विभिन्न वक्तव्यों ने इसकी पुष्टि की। स्टेट काउंसिलर तथा विदेश मन्त्री वांग यी ने कहा कि चीन ने "उल्लेखनीय रूपान्तरण हासिल कर लिया है-यह उठ खड़ा हुआ है, समृद्ध हुआ है और सशक्त हो रहा है। चीन में एक आकस्मिक परिवर्तन हुआ"..... इस सन्दर्भ में उत्तरी कोरिया पर इसकी प्रभावहीनता को चीनी कूटनीति के लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में देखा गया।

पुन:, ध्यान दें कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अन्तर्राष्ट्रीय विभाग के प्रमुख सांग ताओ ने चीनी राष्ट्रपित शी जिनपिंग के विशेष प्रतिनिधि के रूप में नवम्बर 2017 में उत्तरी कोरिया का दौरा किया। राष्ट्रपति ट्रम्प के चीनी दौरे के केवल एक सप्ताह बाद आयोजित इस दौरे से बड़ी आशाएँ थीं। इस दौरे पर क्षेत्रीय हितधारकों की निगाहें लगी थीं किन्तु कोई उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली। इसके अतिरिक्त उत्तरी कोरिया ने सांग ताओ के उत्तरी कोरिया के दौरे के ठीक एक सप्ताह के बाद 29 नवम्बर को अपनी सबसे लम्बी दूरी की मिसाइल का प्रक्षेपण किया।

किम के चीन के हालिया दौरे को चीनी कूटनीति की सफलता के रूप में देखा जा सकता है। इससे चीन वापस उस स्थिति में आ गया जहाँ कोरियाई प्रायद्वीप के मामलों में एक उचित सीमा तक यह एक प्रासंगिक भूमिका की स्थिति में रह सके।अत: सू जियाओहुई (अन्तर्राष्ट्रीय तथा कूटनीतिक अध्ययन, चीनी अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, बीजिंग के उपनिदेशक) सहित चीनी विशेषज्ञों ने रेखांकित किया कि शी-किम की मुलाकात ने क्षेत्रीय मामलों में चीन की भूमिका की प्रभावहीनता के विषय में सन्देह को समाप्त कर दिया है।

<u>कार्यसूची को प्रभावित करने वाला</u>

इस दौरे ने उत्तरी कोरिया की दक्षिणी कोरिया तथा अमेरिका की भावी वार्ता हेतु सम्भावित कार्यसूची को रेखांकित किया जिसमें चीन अपना स्थान बनाने में सक्षम है। परिणामत:, चीन ने जोर दिया कि विगत की इसकी स्थिति ने समस्या के समाधान की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस सन्दर्भ में तीन प्रमुख मुद्दों पर परिचर्चा की जा सकती है :

(i) परमाणु नि:शस्त्रीकरण:

चीनी विदेश मन्त्रालय के प्रवक्ता ने 28 मार्च, 2017 को कहा : "हम चीन के द्विमार्गी सिद्धान्त के अनुरूप इस प्रायद्वीप में परमाणु नि:शस्त्रीकरण, शान्ति एवं स्थायित्व के लिए उपयोग सलाह देने हेतु उत्तरी कोरिया तथा अन्य पक्षों के साथ कार्य करने के लिए तैयार हैं।" इस मुद्दे पर शिन्हुआ का वक्तव्य भी रेखांकित करता है कि चीन "कोरियाई प्रायद्वीप के परमाणु नि:शस्त्रीकरण" के लक्ष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है। अतिथि नेता ने दिवंगत राष्ट्रपति किम इल-सुंग तथा दिवंगत महासचिव किं जोंग-इल की इच्छा के अनुरूप कोरियाई प्रायद्वीप के परमाणु नि:शस्त्रीकरण के लिए अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई। ये वक्तव्य चीन की आधिकारिक स्थिति को पुष्ट करते हैं अत: सु जिआओहुई जैसे चीनी विशेषज्ञ रेखांकित करते हैं कि चीन का "द्विमार्गी आस्थगन" 'दोषमुक्त' हो गया है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस दौरे पर कोरिया की आधिकारिक मीडिया ने परमाणु नि:शस्त्रीकरण के मुद्दे का कोई सन्दर्भ नहीं दिया। यह चर्चा की जा सकती है कि किम जोंग-उन परमाणु नि:शस्त्रीकरण पर गैर-विनिमेय स्थिति में आरओके तथा अमेरिका से उच्चस्तरीय वार्ता नहीं करना चाहते हैं। कोरियाई मीडिया की ओर से इस मुद्दे पर कुछ न कहना उनकी वार्ताओं में दोनों पक्षों हेतु किसी चालबाजी की जगह बना सकता है।

(ii) पक्षों की विनिमेयता का विस्तार:

चीनी स्टेट काउंसिलर और विदेश मन्त्री वांग यी ने 4 अप्रैल, 2018 को उत्तरी कोरिया के अपने समकक्ष से बातचीत के दौरान कहा : "चीन को सभी पक्षों की उचित सुरक्षा चिन्ताओं का समाधान परमाणु नि:शस्त्रीकरण की प्रक्रिया के दौरान हो जाने की आशा है और एक शान्ति प्रक्रिया स्थापित की जा सकती है।" पुन:, चीन की ओर से (किम-शी वार्ता के पश्चात) कुछ वक्तव्यों ने और अधिक देशों के सम्मिलित करने के उद्देश्य पर अपनी स्थिति को रेखांकित किया है। लियाओनिंग एकेडमी ऑफ सोशल साइंसेज (उत्तरी कोरिया से सटे राज्य) में बॉर्डर स्टडीज इंस्टीट्यूट के निदेशक लू चाओ को यह कहते हुए उद्धृत किया गया कि "नि:शस्त्रीकरण के लिए अधिक समय तथा श्रमसाध्यता की आवश्यकता होगी जिसमें अनेक पक्षों को शामिल करना होगा।"

(iii) छ: दलीय वार्ता का पुनरारम्भ

छ: दलीय वार्ता को पुन: प्रारम्भ करने के मुद्दे ने भी चीन में बहस को बढ़ाया है। यह स्वीकार किया गया है कि वार्ता के दौरान किम जोंग-उन ने आशा व्यक्त की कि छ: दलीय वार्ता प्रारम्भ की जा सकती है, यद्यपि इसमें चीन तथा उत्तरी कोरिया दोनों की आधिकारिक मीडिया को शामिल नहीं किया गया था। छ: दलीय वार्ता को पुन: प्रारम्भ करने के प्रश्न का उत्तर देते हुए हुए चीनी विदेश मन्त्रालय के प्रवक्ता ने 28 मार्च, 2017 को कहा : "छ: दलीय वार्ता कोरियाई प्रायद्वीप की समस्या के समाधान को प्रोत्साहित करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण मंच का कार्य करेगी और इसे शीघ्रातिशीघ्र

पुन: प्रारम्भ करने के प्रयास उस दिशा की ओर ले जायेंगे जहाँ सभी सम्बद्ध पक्षों को कार्य करना है। हमें आशा है कि सभी पक्ष 19 सितम्बर के संयुक्त वक्तव्य के सिद्धान्तों तथा भावना का अनुसरण कर सकते हैं।"

नोट : चीन ने 19 सितम्बर, 2005 को निर्गत संयुक्त वक्तव्य के महत्त्व के मानता है और इसने विगत में 19 सितम्बर के संयुक्त वक्तव्य की वर्षगाँठें भी मनायीं। संयुक्त वक्तव्य में कहा गया कि "छ: दलीय वार्ता का उद्देश्य कोरियाई प्रायद्वीप में पुष्ट परमाणु नि:शस्त्रीकरण करना है।" किन्तु वर्तमान/परिवर्तित परिस्थितियों में छ: दलीय वार्ता का महत्त्व नहीं है बल्कि यह कूटनीतिक प्रक्रिया को विलम्बित करेगा।

<u>घनिष्ठ रणनीतिक संवाद बनाये रखने के लिए मतैक्यता</u>

इस दौरे से संकेत मिलता है कि चीन और उत्तरी कोरिया अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों को उन्नत और मजबूत करने के लिए तैयार हैं। उनकी वार्ताओं के दौरान दोनों पक्ष घनिष्ठ रणनीतिक संवाद तथा उच्चस्तरीय दौरों के विनिमय को बनाये रखने के लिए सहमत हुए। यह सार्थक है क्योंकि ऐसी मतैक्यता भावी वार्ताओं तथा कोरियाई प्रायद्वीप में विकासों के भाग्य को प्रभावित करने के लिए चीनी कूटनीति हेतु व्यापक स्थान उपलब्ध करायेगी। पुन:, घनिष्ठ रणनीतिक संवाद पर द्विपक्षीय मतैक्यता विश्व में यह संदेश देगी कि कोरियाई प्रायद्वीप के भाग्य का निर्धारण करते समय चीन को दरकिनार नहीं किया जा सकता है।

अत: चीनी दृष्टिकोण से यह एक महत्त्वपूर्ण यात्रा थी। यह मात्र संयोग नहीं था कि प्रधानमन्त्री ली केकियांग सहित चीन के शीर्ष नेताओं ने इस यात्रा के दौरान विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। शी और उनकी पत्नी पेंगलियुआन ने किम तथा उनकी पत्नी रि सोल-जू के स्वागत में भोज आयोजित किया और साथ बैठकर कला प्रस्तुति का आनन्द लिया। मामले की गम्भीरता को जानते हुए मीडिया अत्यन्त सतर्क थी और सोशल मीडिया पूरी तरह नियन्त्रित थी। उदाहरण के लिए चीनी इंटरनेट सेंसर ने किम जोंग-उन की पत्नी से सम्बन्धित उनकी पोशाक, सुन्दरता तथा स्टाइल पर किसी परिचर्चा या पेंगलियुवान तथा प्रसिद्ध चीनी अभिनेत्री सांग हाए-क्यो से तुलना करने पर तुरन्त कार्यवाही की।

यह उल्लेखनीय है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अन्तर्राष्ट्रीय विभाग के प्रमुख सांग ताओ ने 13 अप्रैल को स्प्रिंग फ्रेंडशिप आर्ट फेस्टिवल में शामिल होने के लिए चीनी कलाकार समूह का नेतृत्व करते हुए उत्तरी कोरिया की यात्रा की। परिवर्तित परिस्थितियों में किम ने सांग से मुलाकात की और 'डीपीआरके-चीन मैत्री का संयुक्त रूप से एक नया अध्याय लिखने' का वादा किया। यह स्पष्ट है कि नवम्बर 2017 के दौरे की तुलना में अप्रैल 2018 के दौरे में सांग को अधिक महत्त्व दिया गया।

कोरियाई प्रायद्वीप में चीन की भूमिका तथा विशाल शक्ति प्रतिस्पर्द्धा

चीन का द्विमार्गी उपागम तथा 'द्विमार्गी निलम्बन' प्रस्ताव कोरियाई प्रायद्वीप की समस्या के समाधान में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के चीन के इरादों के सूचक हैं। चीन उत्तरी कोरिया के साथ अपने सम्बन्धों को उत्तरी कोरिया के रणनीतिक महत्त्व के कारण 'लिप्स एण्ड टीथ' सम्बन्ध के रूप में देखता है। जब चीन "नये प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों" को तीव्र करने के उद्देश्य से चीनी सिद्धान्तों के अनुसार प्रमुख राष्ट्रीय कूटनीति की ओर देख रहा है तो चीन की भूमिका के प्रभावहीन होने का भय किम के "हमारे स्वयं के राष्ट्र द्वारा" सिद्धान्त के सन्दर्भ के अनुपालन में निहित है।

किन्तु 18 अप्रैल, 2018 को चीनी विदेश मन्त्रालय ने इस आधार पर कोरियाई प्रायद्वीप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका की बात दुहराई कि यह 1953 के आर्मिस्टाइस समझौते में एक पक्ष था। इसने यह भी कहा कि "कोरियाई प्रायद्वीप का परमाणु नि:शस्त्रीकरण कोरियाई प्रायद्वीप से सम्बन्धित सभी समस्याओं के समाधान तथा दीर्घकालीन शान्ति और स्थायित्व की मास्टर कुंजी है" और सभी पक्षों से "इस सर्वमान्य दिशा में दृढ़तापूर्वक लगे रहने" का निवेदन किया। दूसरे, इसने सभी पक्षों से चीन के "द्विमार्गी उपागम" प्रस्ताव से जुड़ने का सुझाव दिया जो "परमाणु नि:शस्त्रीकरण हासिल करने की प्रक्रिया में उत्तरी कोरिया की निष्पक्ष एवं वैध सुरक्षा चिन्ताओं" पर बल देती है। तीसरे, चीन ने सभी पक्षों से "चरणबद्ध ढंग से और समकालिक रूप से समग्र समाधान प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध रहने" का निवेदन किया। विदेश मन्त्री वांग यी के अनुसार "शान्ति प्रक्रिया परमाणु नि:शस्त्रीकरण की पूर्वशर्त के अधीन तथा चरणबद्ध ढंग से सभी प्रासंगिक पक्षों के समेकित प्रयासों द्वारा आगे बढ़ानी चाहिए।" वांग द्वारा व्यक्त चीन की स्थिति निहितार्थ रूप से उत्तरी कोरिया के साथ साझा पृष्ठभूमि को रेखांकित करती है।

इस प्रसंग में उत्तरी कोरिया के प्रति बीजिंग का पक्षपात तथा उत्तरी कोरिया को निषिद्ध करने में अपने प्रभाव का प्रयोग न करना उभरते हुए चीन-उत्तरी कोरिया सम्बन्ध को समझने के लिए केन्द्रीय स्थिति में बना हुआ है। साथ ही, यह उत्तरी कोरिया के प्रति चीन के सन्धि दायित्वों के विरोधाभास तथा उत्तरदायी शक्ति के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के चीनी प्रयास को प्रतिबिम्बित करता है। साथ ही साथ राष्ट्रीय हित बीजिंग तथा प्योंगयांग में दोनों जगह निर्मित नीतियों को परिवर्तित करने तथा प्रभावित करने में लगे हैं।

चीन-उत्तरी कोरिया सम्बन्धों की समस्याएँ

रणनीतिक तथा विचाराधारात्मक तथ्य और उत्तरी कोरिया में मानवतावादी संकटों ने चीन को प्योंगयांग के विरुद्ध कठोर नीति अपनाने से रोक दिया है। किन्तु दोनों देशों के पास विगत के अनेक ऐसे मुद्दे हैं जिन्होंने उनके सम्बन्धों को प्रभावित किया है। कोगुरयो का प्राचीन इतिहास ऐसे मुद्दे का एक उदाहरण है। चीन तथा दोनों कोरियाई राष्ट्रों के मध्य इतिहास के मुद्दे संवेदनशील बने हुए हैं। दोनों कोरियाई राष्ट्रों के इतिहासकारों ने चीनी सरकार द्वारा वित्तपोषित 'पूर्वोत्तर परियोजना' को चुनौती दी है जिसमें कोगुरयो साम्राज्य के इतिहास को चीनी इतिहास का हिस्सा बताया गया है।

साथ ही, उत्तरी कोरिया में 'यानन फैक्शन' नामक चीन समर्थक समूह कोरियाई युद्ध के तुरन्त बाद अपने सम्बन्धों के प्रति कटु हो गये। इन सबसे परे, 1992 में दक्षिणी कोरिया के साथ चीन द्वारा कूटनीतिक सम्बन्ध की स्थापना ने उनकी मैत्री तथा पारस्परिक विश्वास को प्रभावित किया।

इसी प्रकार, विगत समय में दिसम्बर 2011 में किम जोंग-उन के सत्तासीन होने के पश्चात ये सम्बन्ध ठहराव की अवधि में चले गये। किम के चाचा जैंग सोंग-थाएक को चीन के प्रति उत्तरी कोरिया की नीति को निर्धारित करने वाले प्रमुख व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। किन्तु, 2013 में जैंग सोंग थाएक को 2013 में फाँसी दे दिये जाने के उपरान्त द्विपक्षीय सम्बन्धों को आघात लगा। पुन: ह्वांगगुमप्योंग द्वीप के एक तथा नये यालू नदी सेतु के निर्माण कार्य सहित उत्तरी कोरिया के विशेष आर्थिक क्षेत्र के क्रियान्वयन प्योंगयांग के बीजिंग के साथ मतभेदों के कारण प्रभावित हुए। साथ ही, बीजिंग ने उत्तरी कोरिया द्वारा बार-बार मिसाइल तथा नाभिकीय अस्त्रों के परीक्षण किये जाने पर निराशा व्यक्त की। इसके प्रत्युत्तर में बीजिंग संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के माध्यम से प्योंगयांग के विरुद्ध कठोर प्रतिबन्ध लगाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में शामिल हो गया। इससे पर्याप्त सीमा तक उत्तरी कोरिया की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई और निस्सन्देह इससे द्विपक्षीय सम्बन्धों में कटुता आई। इसके अतिरिक्त चीन उत्तरी कोरिया में रेसन पोर्ट के साथ पूर्वोत्तर चीन को जोड़ने वाले आर्थिक कॉरीडोर का संयुक्त रूप से निर्माण करने का इच्छुक है। किन्तु उत्तरी कोरिया के आर्थिक एवं विदेश नीति मामलों में सुधार हुए बिना यह सम्भव नहीं है।

<u>उभरती वृहत शक्ति प्रतिस्पर्द्धा</u>

कोरियाई प्रायद्वीप पूर्वोत्तर एशिया में वृहत शक्ति प्रतिस्पर्द्धा के उभरते परिवेश में शामिल है। यदि किम जोंग-उन अमेरिकी दबाव से मुक्ति पाने में चीन का समर्थन चाहते हैं तो चीन अमेरिका के साथ अपनी भूराजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में उत्तरी कोरिया का इस्तेमाल कर सकता है। ताइवान में स्वतन्त्रता आन्दोलन तथा ट्रम्प प्रशासन द्वारा ताइवान यात्रा अधिनियम पारित करना बीजिंग के हितों को प्रभावित करने वाले हैं। साथ ही, अमेरिका द्वारा ताइवान को हथियारों की बिक्री इस क्षेत्र में उभरते परिवेश का एक अंग है। इस रणनीतिक परिवेश में, उत्तरी कोरिया को अमेरिका के सन्दर्भ में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए चीनी सहयोग की आवश्यकता है। यह अन्तर्निर्भरता "साझा रणनीतिक विकल्प" तथा "एकमात्र उचित विकल्प" के रूप में जुड़ी है। वर्तमान स्थिति में चीन तथा उत्तरी कोरिया की इस खेल में बाजी अधिक है।

सितम्बर 2017 में, इंग्लैण्ड में चीनी राजदूत लियू जियाओमिंग ने कहा कि चीन के पास उत्तरी कोरिया संकट के लिए कोई "मास्टर चाबी" नहीं है। लियू ने उत्तरी कोरिया तथा अमेरिका के बीच गम्भीर अविश्वास के कारण क्षेत्र में व्याप्त "असुरक्षा की भावना" की ओर संकेत किया। पुन:, 5 अप्रैल, 2018 को चीनी स्टेट काउंसिलर और विदेश मन्त्री वांग यी ने मास्को में एक समाचार सम्मेलन में कहा कि कोरियाई प्रायद्वीप का नाभिकीय मुद्दा उत्तरी कोरिया के सम्मुख "सुरक्षा खतरे"

से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है। बीजिंग का स्पष्ट मानना है कि कोरियाई प्रायद्वीप में परमाणु नि:शस्त्रीकरण की प्रक्रिया में प्रस्तावित द्विमार्गी उपागम के तहत उत्तरी कोरिया की सुरक्षा चिन्ताओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए। यही सुरक्षा की महत्त्वपूर्ण कुंजी है जिसे उत्तरी कोरिया चाहता है।

यद्यपि चीन शान्ति स्थापना का प्रस्ताव किया है किन्तु उत्तरी कोरिया का समर्थन करना उस व्यवस्था की स्थापना पर निर्भर है जो उसकी सत्ता की स्थिरता और सुरक्षा की गारंटी दे सके। इसके परिणामस्वरूप, उत्तरी कोरिया की असुरक्षा को कम करने के लिए ट्रम्प प्रशासन की रियायत चीनी दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। इसके अतिरिक्त, कोरियाई प्रायद्वीप के परमाणु नि:शस्त्रीकरण में दक्षिणी कोरिया में अमेरिकी नाभिकीय अस्त्रों की तैनाती भी शामिल है।

एक ओर दक्षिणी कोरिया में टर्मिनल हाई आल्टीट्यूड एरिया डिफेंस (थाड) मिसाइल प्रणाली की नियुक्ति का विरोध करके चीन ने पुष्ट किया है कि वह कोरियाई नाभिकीय संकट की कार्यवाही को अनदेखा नहीं कर सकता है। चीनी दृष्टिकोण से कोरियाई प्रायद्वीप में विकास चीन की सुरक्षा तथा क्षेत्रीय स्थिरता से अभिन्न रूप से जुड़े हैं। अत: बीजिंग ने दिसम्बर 2017 में थाड प्रणाली की नियुक्ति के पश्चात एक 'नयी पहल' के लिए वादा करने हेतु दक्षिणी कोरिया के राष्ट्रपति मून जाई-इन के चीनी दौरे का स्वागत किया। इसी बीच यह देखा गया कि बीजिंग भी अमेरिका, दक्षिणी कोरिया तथा जापान के रक्षा गठबन्धन के निर्माण तथा क्षेत्रीय मिसाइल रक्षा प्रणाली की संस्थापना के विषय में चिन्तित है।

वृहत शक्ति सम्बन्धों के सन्दर्भ में चीन-रूस रणनीतिक साझेदारी अमेरिकी प्रभुत्व के विरुद्ध तथा वैश्विक रणनीतिक स्थायित्व के प्रति निर्देशित है। चीन तथा रूस अपने "आसपास के क्षेत्रों" की स्थिरता को प्रोत्साहित करने पर सहमत हैं। 22 मई, 2017 को चीन के सहायक विदेश मन्त्री कोंग जुआनयू तथा रूस के उप विदेश मन्त्री इगोर मोरगुलोव ने मास्को में परामर्श किया। दोनों पक्षों ने कोरियाई प्रायद्वीप में युद्ध तथा अशान्ति न होने देने की पुष्टि की और तनाव बढ़ाने वाले किसी भी पक्ष का विरोध किया। यह सभी सम्बद्ध पक्षों को मर्यादित रहने के उद्देश्य से था। इसके अतिरिक्त चीन तथा रूस ने थाड की नियुक्ति तथा इस क्षेत्र में "अतिरिक्त क्षेत्रीय सैनिकों" की उपस्थिति का घोर विरोध किया। यह वक्तव्य चीन, अमेरिका तथा रूस के मध्य कोरियाई प्रायद्वीप के मुद्दे पर वृहत शक्ति प्रतिस्पर्द्धा को रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

नये परिदृश्य में किम की औचक चीनी दौरा कोरियाई प्रायद्वीप के भावी विकास में बने रहने के लिए बीजिंग को एक अवसर प्रदान करता है। किन्तु, राष्ट्रपति ट्रम्प के साथ वार्ता निर्धारित होने के तुरन्त बाद किम के चीनी दौरे का यह समय उत्तरी कोरिया-चीन सम्बन्धों के नये आयाम स्थापित करने में प्योंगयांग के लिए लाभदायक हो सकता है। किम का कूटनीतिक कौशल पुन: चीन का समर्थन हासिल

करके महाशक्तियों के मध्य वर्तमान रणनीतिक प्रतिस्पर्द्धा के स्थिति में परिवर्तन करने की उत्तरी कोरिया की क्षमता को प्रदर्शित करता है। उत्तरी कोरिया दक्षिणी कोरिया तथा अमेरिका से भावी बातचीत के लिए अब एक उत्तम स्थिति में है। यह स्थिति ट्रम्प के दबाव वाली नीति के प्रति उत्तरी कोरिया को अपेक्षाकृत कम संवेदनशील स्थिति में लाती है। उत्तरी कोरिया-चीन सम्बन्धों का यह नया परिदृश्य उत्तरी कोरिया के साथ सियोल तथा वांशिगटन की होने वाली आगामी वार्ता के उपागम के विषय में उन्हें एक बार पुन: सोचने के लिए विवश करेगी। चीन-उत्तरी कोरिया के पुनर्जीवित सम्बन्धों के साथ प्योंगयांग अब कम अलग-थलग स्थिति में है और उसके पास अधिक विकल्प हैं।

****

**डॉ. संजीव कुमार, डॉ. जोजिन वी. जॉन तथा डॉ. पुयम राकेश सिंह, शोधार्थी, वैश्विक मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली।*

अस्वीकरण : ये व्यक्त विचार शोधार्थियों के हैं न कि परिषद के।

अंत टिप्पण

i "Kim Jong Un Pays Unofficial Visit to China", *KCNA*, March 28, 2018, www.kcna.kp (Accessed on April 4, 2018); "Xi Jinping, Kim Jong Un hold talks in Beijing", *Xinhua,* March 28, 2018, www.xinhuanet.com/english/2018-03/28/c_137070598.htm (Accessed on April 4, 2018)

ii "N. Korea apparently conducts nuke test: S. Korea", The Yonhap News, September 3, 2017, english.yonhapnews.co.kr/news/2017/09/03/0200000000AEN20170903001360315.html

iii Ibid

iv "DPRK Gov't Statement on Successful Test-fire of New-Type ICBM", KCNA, November 29, 2017, https://kcna.kp

v David Wright, "North Korea's Longest Missile Test Yet", November 28, 2017, www.allthingsnuclear.org/dwright/nk-longest-missile-test-yet

vi Trump, Twitter, August 11, 2017, https://twitter.com/realDonaldTrump/status/895970429734711298; John Wagner, "Trump's national security adviser says U.S. no closer to war with North Korea than a week ago", The Washington Post, August 13 , 2017, https://www.washingtonpost.com/news/post - politics/wp/2017/08/13/trumps - national - security - adviser - says - u - s - no - closer - to - war - with - north - korea - than - a - week - ago/?utm_term=.e692afb4c904; "U.S. preparing for 'preventive war' with N. Korea: McMaster", The Yonhap News, August 6, 2017, http://english.yonhapnews.co.kr/northkorea/2017/08/06/26/0401000000AEN20170806000200315F.html

vii "Remarks at the UN Security Council Ministerial Meeting on D.P.R.K.", US State Department, December 15, 2017, https://www.state.gov/secretary/remarks/2017/12/276627.htm

viii "Statement of DPRK Foreign Ministry Spokesman", KCNA, December 24, 2017, kcna.kp/kcna.user.article.retrieveNewsViewInfoList.kcmsf#this

ix "N.K. willing to send delegation to PyeongChang Olympics: leader", The Yonhap News, January 1, 2018, http://english.yonhapnews.co.kr/northkorea/2017/12/29/0401000000AEN20171229005253315.html

x "N.K. to send leader Kim Jong-un's sister to S. Korea this week", Yonhap News, February 7, 2018, www.english.yonhapnews.co.kr/northkorea/2018/02/06/0401000000AEN20180206013552315.html

xi "Inter-Korean Summit held at the end of April" - Result of North Korea Special Mission Delegation Cheong Wa Dae briefing", Office of the President, March 6, 2018, http://www1.president.go.kr/articles/2503; "Koreas agree to hold third summit in April, reaffirm resolve to denuclearize", The Yonhap News, March 6, 2018, english.yonhapnews.co.kr/northkorea/2018/03/06/0401000000AEN20180306013055315.html

xii "Remarks by Republic of Korea National Security Advisor Chung Eui-Yong", The White House, March 8, 2018, https://www.whitehouse.gov/briefings-statements/remarks-republic-korea-national-security-advisor-chung-eui-yong/

xiii Ibid

xiv Ibid

xv Ibid

xvi Ibid

xvii "Kim Jong Un's Speech at Banquet", *Rodong Sinmum*, March 28, 2018, http://www.rodong.rep.kp/en/index.php?strPageID=SF01_02_01&newsID=2018-03-28-0016 (Accessed on April 4, 2018)
xviii Ibid
xix "Xi Jinping, Kim Jong Un hold talks in Beijing", *Xinhua*, March 28, 2018, www.xinhuanet.com/english/2018 (Accessed on April 4, 2018)
xx Ibid
xxi "Kim Jong Un's Speech at Banquet", *Rodong Sinmum*, March 28, 2018, http://www.rodong.rep.kp/en/index.php?strPageID=SF01_02_01&newsID=2018-03-28-0016 (Accessed on April 4, 2018)
xxii Zhu Feng, "China's North Korean Liability", *Foreign Affairs*, July 11, 2017, https://www.foreignaffairs.com/articles/china/2017-07-11/chinas-north-korean-liability (Accessed on April 5, 2018)
xxiii "How China should respond to dramatic Korean Peninsula changes", *Global Times*, March 3, 2018, http://www.globaltimes.cn/content/1092567.shtml (Accessed on April 7, 2018)
xxiv Remarks by H.E. Wang Yi Minister of Foreign Affairs of the People's Republic of China at the 2018 New Year Reception, MOFA, PRC, January 30, 2018, http://www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/wjdt_665385/zyjh_665391/t1530525.shtml (Accessed on April 7, 2018)
xxv "N. Korea claims successful test of new ICBM ", The Yonhap News, November 29, 2018, english.yonhapnews.co.kr/northkorea/2017/11/29/0401000000AEN20171129002952315.html (Accessed on April 7, 2018)
xxvi Su Xiaohui, "Kim's Surprise Visit to China", China Institute of International Studies, April 3, 2018 http://www.ciis.org.cn/english/2018-04/03/content_40279413.htm (Accessed on April 8, 2018)
xxvii"Foreign Ministry Spokesperson Lu Kang's Regular Press Conference", MOFA, PRC, March 28, 2018, http://www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/xwfw_665399/s2510_665401/2511_665403/t1546242.shtml (Accessed on April 7, 2018)
xxviii "Xi Jinping, Kim Jong Un hold talks in Beijing", Xinhua, March 28, 2018, www.xinhuanet.com/english/2018-03/28/c_137070598.htm(Accessed on April 7, 2018)
xxix China proposed "double suspension" to defuse crisis of the Korean Peninsula in March 2017 and suggested that as first step, North Korea may suspend its nuclear and missile activities in exchange for the suspension of large-scale US- South Korea military exercises.
xxx China's Foreign Minister meets DPRK counterpart in Beijing, MOFA, PRC, April 4, 2018, http://en.people.cn/n3/2018/0404/c90000-9445426.html (Accessed on April 8, 2018)
xxxi Kim Jong-un tells Xi Jinping he's willing to denuclearise, but does anyone really know what that means?, South China Morning Post, March 29, 2018, http://www.scmp.com/news/china/diplomacy-defence/article/2139355/kim-jong-un-tells-xi-jinping-hes-willing-denuclearise (Accessed on April 8, 2018)
xxxii "Kim Jong Un offers to return to six-party talks", Nikkei Asia Review, April 5, 2018, https://asia.nikkei.com/Politics/International-Relations/Kim-Jong-Un-offers-to-return-to-six-party-talks (Accessed on April 8, 2018)
xxxiii "Foreign Ministry Spokesperson Lu Kang's Regular Press Conference", MOFA, PRC, March 29, 2018, www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/xwfw_665399/s2510_665401/2511_665403/t1546588.shtml (Accessed on April 8, 2018)
xxxiv Para I of the Six-Party talks joint statement issued on September 19, 2005 notes: "The six parties unanimously reaffirmed that the goal of the six-party talks is the verifiable denuclearization of the Korean Peninsula in a peaceful manner.
The DPRK committed to abandoning all nuclear weapons and existing nuclear programs and returning, at an early date, to the Treaty on the Non-Proliferation of Nuclear Weapons and to IAEA safeguards. The United States affirmed that it has no nuclear weapons on the Korean Peninsula and has no intention to attack or invade the DPRK with nuclear or conventional weapons.
The ROK reaffirmed its commitment not to receive or deploy nuclear weapons in accordance with the 1992 Joint Declaration of the Denuclearization of the Korean Peninsula, while affirming that there exist no nuclear weapons within its territory.
The 1992 Joint Declaration of the Denuclearization of the Korean Peninsula should be observed and implemented."
"Full text of 6-party talks joint statement", China Daily, September 19, 2005, http://www.chinadaily.com.cn/english/doc/2005-09/19/content_479150_2.htm (Accessed on April 8, 2018)
xxxv "Kim Jong-un wife's fashion sense a hit with China's public" South China Morning Post, March 28, 2018, http://www.scmp.com/news/china/diplomacy-defence/article/2139278/kim-jong-un-wifes-stylish-fashion-sense-hit-chinas (Accessed on April 8, 2018)
xxxvi The 'dual-track' approach to the Korean Peninsula issue stands for denuclearisation of the Korean Peninsula and the establishment of a peace mechanism to maintain peace and stability.
xxxvii 'China proposes "double suspension" to defuse Korean Peninsula crisis', Xinhua, March 8, 2017, http://www.xinhuanet.com/english/2017-03/08/c_136112435.htm (Accessed on April 10, 2018)
xxxviii Full text of Xi Jinping's report at 19th CPC National Congress, Xinhua, November 3, 2017, http://www.xinhuanet.com/english/special/2017-11/03/c_136725942.htm.

xxxix Kim Jong Un's 2018 New Year's Address, January 1, 2018, https://www.ncnk.org/node/1427 (Accessed on April 11, 2018)
xl "Foreign Ministry Spokesperson Hua Chunying's Regular Press Conference", MOFA, PRC, April 18, 2018, www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/xwfw_665399/s2510_665401/2511_665403/t1552217.shtml (Accessed on April 23, 2018)
xli Ibid
xlii "Adhering to the "Dual-Track Approach": The Realization of Denuclearization of the Korean Peninsula and the Establishment of Peaceful Mechanism on the Korean Peninsula", MOFA, PRC, April 5, 2018, www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/zxxx_662805/t1548991.shtml Accessed on April 20, 2018.
xliii Yonson Ahn, "The Korea-China Textbook War—What's it All About?", https://historynewsnetwork.org/article/21617, Accessed on April 19, 2018.
xliv "Xi-Kim historic meeting gives fresh impetus to peninsula situation: People's Daily Editorial", People's Daily, March 29, 2018, http://en.people.cn/n3/2018/0329/c90000-9443267.html, Accessed on April 19, 2018.
xlv The Daily Telegraph Publishes a Signed Article by Ambassador Liu Xiaoming Entitled "China is not the key to North Korean Crisis", MOFA, PRC, September 8, 2017, http://www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/wjb_663304/zwjg_665342/zwbd_665378/t1491501.shtml (Accessed on April 10, 2018)
xlvi "China advocates dual-track approach to solve Korean Peninsula nuclear issue: FM", Xinhua, April 5, 2018, http://www.xinhuanet.com/english/2018-04/05/c_137090767.htm (Accessed on April 9, 2018)
xlvii Liu Zhen, "Why South Korea's promises on THAAD and a US-Japan alliance are so important to China", South China Morning Post, November 6, 2017, http://www.scmp.com/news/china/diplomacy-defence/article/2118499/why-south-koreas-promises-thaad-and-us-japan-alliance (Accessed on April 11, 2018)
xlviii "Treaty of Good-Neighbourliness and Friendly Cooperation between the People's Republic of China and the Russian Federation", MOFA, PRC, July 24, 2001, http://www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/wjdt_665385/2649_665393/t15771.shtml (Accessed on April 10, 2018)
xlix "China and Russia Hold Consultation on the Korean Peninsula Issue", MOFA, PRC, May 23, 2017, http://www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/wjdt_665385/wshd_665389/t1465155.shtml (Accessed on April 10, 2018)
l "Joint statement by the Russian and Chinese foreign ministries on the Korean Peninsula's problems", MOFA, Russian Federation, July 4, 2017, http://www.mid.ru/en/foreign_policy/news/-/asset_publisher/cKNonkJE02Bw/content/id/2807662 (Accessed on April 11, 2018)